संत श्री सुन्दरदास जी (छोटे) का जीवन चरित्र

डॉ. दयाराम स्वमी
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (स्वर्णपदक)
वरिष्ठ मानसिक रोग विशेषज्ञ एवं पूर्व विशेषज्ञ
एस.एम.एस. हॉस्पिटल, जयपुर

मंगलाचरण :- **दादू नमो नमो, निरंजनम् नमस्कार गुरुदेवतः।**
वन्दनं सर्वसाधवाः प्रणामं पारंगतः।।
सुन्दर ने सुन्दर रचे, सुन्दरता के साज।
सुन्दर मन से मनन कर, सुन्दरानन्द लहैं आज।।

परमश्रद्धेय विश्वगुरु महामण्डलेश्वर परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्द जी महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर जी महाराज तथा डा. सुरेन्द्रकुमार शर्मा जी पूर्व प्राचार्य श्री दादू महाविद्यालय विश्वगुरूदीप आश्रम शोध संस्थान, कीर्ति नगर, श्यामनगर सोडाला जयपुर। सुन्दरदासजी को भक्ति, ज्ञान और योग का परमवेत्ता कहा गया है। भक्तमाल में दूसरा शंकराचार्य तक कहा गया है। शंकराचार्य दूसरौ, दादू के सुन्दर भयौ। आपने इन विषयों पर ग्रन्थ लिखे, जिनको एक ग्रंथ के रूप में संकलित कर सुन्दर ग्रन्थावली बनाई गई, जो सुप्रसिद्ध है। दादू सम्प्रदाय में इनके विषय में प्रसिद्ध हैः-

दादू दीन दयालु के, चेले दोय पचास।
केइ उडगण केई इन्दु है, दिनकर सुन्दरदास।।

'सुन्दरे किन्न सुन्दरं' अर्थात् सुन्दर दास जी की कोई भी रचना ऐसी नहीं होगी जो सुन्दर नहीं हो। विविध प्रकार के छंदो में नियमानुसार यथा चौबोला, गूढार्थ चित्रकाव्य, निगडबन्धादि के प्रयोग भी आपकी प्रतिभा के द्योतक हैं। आपकी वाणी अनुष्टुप (32 अक्षर का एक पद्य) मान कर गिनने में 8000 है।

सम्पूर्ण वाणी पुरोहित हरिनारायणजी ने वि.सं. 1993 में सम्पादित करके कलकत्ता से छपवायी थी। दूसरा संस्करण संत कवि श्रीनारायण दास जी महाराज पुष्कर द्वारा संपादित कर छपवाया गया।

तत्पश्चात् श्री द्वारिका दास जी शास्त्री एवं महन्त बजरंगदास जी जयपुर द्वारा टीका सहित सम्पादन किया गया है।

हाल ही मैं श्री दादूदयाल महासभा द्वारा सुन्दरग्रंथावली का 30 नवम्बर 2020 को प्रकाशन किया गया। जिसकी मूल टीका संत कवि स्वामी नारायण दास जी महाराज की है तथा संपादन वैद्य श्री गोपीनाथ जी पारीक जयपुर द्वारा अति सुन्दर ढंग से किया गया है।

सुन्दरदास जी की सम्पूर्ण वाणी पद्यमय ही है। गद्य आपने कुछ नहीं लिखा । इनकी वाणी में कुल पद्य 3593 हैं। ज्ञानसमुद्र में 34 प्रकार के छंद दिये हैं। पद्य संख्या 314 हैं। लघु ग्रंथावली में 19 प्रकार के छंद है। सब पद्य संख्या 1216 सवैया सुन्दर विलास में 10 प्रकार के छंद हैं। सर्व पद्य संख्या 563 हैं। साखी ग्रंथ में एक प्रकार का ही छंद है, सर्व पद्यसंख्या 1351 हैं, पद 27 रागों में 212 हैं। फुटकर काव्य में 10 प्रकार के छंद हैं और सर्व पद्य 149 हैं।

आपकी रचना शान्तरसमय होने पर भी काव्यांगों को धारण करती है। काव्य के सभी गुण इसमें है। अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, छंद रचना-चातुर्य, सुन्दर शब्द योजना, गुणीभूतव्यंग्य, रस, अलंकार, प्रसाद और माधुर्य गुणों से सर्वत्र (परिप्लुत या रंजित है) परिपूर्ण है। कहीं कहीं ओजगुण भी झलकता है। रसप्रसंगानुसार गौडी , वैदर्भी , लाटी आदि रीतियों का भी प्रदर्शन और अनुसरण हुआ है । भाषा संसार में आप आदर्श एवं अनुकरणीय कवियों में गिने गये हैं। वेदांत जैसे गम्भीर विषयों को आपने बड़ी सरल भाषा में समझाने का सुन्दर प्रयत्न किया है । अतः सुन्दरदास जी की वाणी प्रसाद माधुर्य सहित, सरल, सरस ,लोकप्रिय भाषा, लोकोक्ति ,सदुक्तिसम्पन्न गम्भीर विषयों को सीधे - सादे ढंग से कहने वाली होने के साथ साथ ज्ञान,भक्ति, वैराग्य नीति सदुपदेशादि का भण्डार होने से सर्वश्रेष्ठ है ''परोपकाराय सतां विभूतयः''इस कथन का पालन करके आपने जगत् का अति उपकार किया है। साधारण हिन्दी जानने वाले के भी मन को आनन्द प्राप्त होता है। शांत रस में वीर रस कहते हुए संतों को महाशूर कहा है :-

''महाशूर तिनका यश गाऊं , जिन हरि से लय ल्या रे''। उक्त प्रकार सुंदर वाणी में शूरातन का अंग ही पूर्ण शौर्य से भरा है। शांतरस में श्रृंगार रस ''जो पिय को व्रत ले रहै, सो पिय की पियारी ।''उक्त प्रकार विरह और विरहिणी का वर्णन श्रृंगाररसपूर्ण है। सुन्दरदास जी उत्तम कवि हैं । उनकी रचना हरियशपूर्ण है। अतः शांत रस रसो में सम्राट् के समान विराजता है। ब्रह्म रस रूप है , ब्रह्म का वर्णन शांतरसप्रधान है। अलंकार भी सुन्दरवाणी में स्वाभाविक प्रयुक्त हुए हैं। ज्ञानसमुद्र के आरम्भ में ग्रंथवर्णन शीर्षक में ज्ञानसमुद्र का जलसमुद्र के साथ रूपक अलंकार से कथन किया है ।

अर्थालंकार - **गुरुदेव बिना नहिं मारग सूझो।**
गुरु बिन भक्ति न जानों ।।

इसमें विनोक्ति अलंकार है । जिस के बिना जो नहीं हो, वहाँ विनोक्ति होता है ।. 'गुरु बिन ज्ञान नहीं '' यह

विनोक्ति अलंकार है । निद्रा में सूता है जो लों,जन्म मरण का अन्त न तोलो । जाग पड़े से स्वप्न समान, तब मिट जाय सकल अज्ञान (ज्ञान समुद्र)। यहां विचित्रालंकार है । लोकोक्ति - जो गुड खाय सो कान बिंधावे । चूंच दई सो चूंनहु दे है। उक्त प्रकार सुन्दर वाणी में लोकोक्ति अंलकार बहुत हैं। शब्दालंकार वृत्यानुप्रास ''धरी धरी धरत'', छीजत जात, छिन छिन दंत गये, मुख के नखरे न गये, सु खरो खर कामी । वक्रोक्ति है । यद्यपि संत अलकारों को विशेष महत्व नहीं देते, वे तो भक्ति ज्ञान वैराग्य पूर्ण केवल शांत रस की ही रचना करते हैं । संत सदा लोकसेवक के रूप में सामने आये हैं । इन्होंने छूआछूत,ऊँच नीच और जातिवाद का सदा विरोध किया है । ''जिन जाति , कुल अरु वरण आश्रम कहत मिथ्या नाम है.। दादूदयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणाम है ।।''

आपका जीवनकाल वि.स 1653 से 1746 (93 वर्ष) तक रहा । सुन्दर वाणी में कमलबन्ध और छत्रबन्ध आदि बहुत से चित्रबंध हैं। दादूपंथ के पुरोधा आयुर्वेद मार्तण्ड श्री लक्ष्मीराम जी महाराज के दीक्षागुरु श्री चन्दनदास जी महाराज भी ऐसे छंदों एवं अलंकारों के विद्वान् थे, जिनका अदभुत ग्रंथ छंदोविन्मंडन है। तथा इसका प्रकाशन स्वामी लक्ष्मीराम जी महाराज द्वारा करवाया गया था।

हिन्दी साहित्य के इतिहासकार एवं प्रसिद्ध विचारक आचार्य श्री रामचंद्र शुक्ल ने आपके विषय में लिखा कि - ''ये मात्र कवि नहीं, अपितु समाज, संस्कृति और भाषा के प्रति जागरूक बने रह कर जीवन-परिवेश के प्रति उत्तरदायी रहे। सच तो यह है, कि अपने देशकाल की अस्मिता को इन्होंने वाणी बद्ध किया है।''

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने आपके विषय में लिखा है, कि ''कोई भी भाषा अपने साहित्य की दृष्टि से ही अपने प्रति श्रद्धा आकर्षित कर सकती है। इस प्रकार का विशेष महत्त्व हिन्दी भाषा के साहित्य में यथेच्छ रूप से पाया जाता है। मध्ययुग के साधक कवियों ने हिन्दी भाषा में जिस भावधारा का ऐश्वर्य-विस्तार किया है, उसमें असाधारण विशेषता पायी जाती है। स्वच्छ जल का स्रोत जिस प्रकार पृथ्वी के गर्भ से अपने आन्तरिक वेग के साथ स्वतः ही उत्साहित होता रहता है, उसी प्रकार इन कवियों की भावधारा अपने शुद्ध आनन्द की प्रेरणा से स्वतः प्रवाहित हुई है। इस प्रकार के साधक कवियों में एक मात्र सुन्दरदासजी ही शास्त्रज्ञ पंडित थे।''

सुन्दरदासजी पूर्व जन्म में दादूजी के शिष्य जग्गाजी थे। आमेर में भिक्षा के लिए गये, तब आउ बंध टूट जाने से बोलने लगे ''दे माई सूत ले माई पूत''। सौखिया परिवार की सतीबाई ने काते हुए सूत की कूकड़ियों की अंजली भर कर कहा ''लो बाबाजी सूत, दो बाबाजी पूत''।

छोटे सुन्दरदास जी का जन्म वि.स. 1653 चैत्र शुक्ला नवमी को मध्याह के समय दौसा में हुआ था। इनके पिता का नाम परमानन्द चोखा था। वे बूसर गोत्रीय खण्डेलवाल वैश्य थे। उनकी पत्नी का नाम सती था। वह सौंखिया गोत्र

खण्डेलवाल थी। सुन्दरदास जी 6 वर्ष के थे, तब दादूजी के चरणों में रखा, तब दादूजी ने कहा सुन्दर आ गया। लगभग 8 वर्ष की आयु में दादूजी के महोत्सव में अपने पिता और जगजीवन के साथ नरायणा दादूधाम में आये थे।

11 वर्ष की अवस्था में सुन्दरदास जी वि. 1663 में अपने घर को त्याग कर रज्जबजी और जगजीवन जी के साथ अध्ययन करने के लिए काशी चले गये । और सुचारु रूप से अध्ययन करने लगे।

काशी में आप असी घाट पर रहा करते थे, जहाँ अब दादूमठ नामक स्थान बना हुआ है।

सुन्दरदासजी द्वारा सबसे पहले ज्ञान समुद्र रचा गया था। ज्ञानसमुद्र को ही सुन्दरदास जी के ग्रंथों की गणना में है, इसे प्रथम स्थान प्राप्त है।

सुन्दरदास जी लगभग 20 वर्ष अध्ययन करके काशी से लौटे और भ्रमण करते हुए फतेहपुर (शेखावटी)नगर में वि.स.1682 कार्तिक शुक्ला को नवाब अलफ खां के समय आये थे और नगर के बाहर किसी सूने स्थान पर रहने लगे थे। वहाँ उनके अनेक चमत्कार देखने को मिले । जैसे :-

- लघु तुम्बी से सब सैनिकों को छाछ पिलाना
- नवाब अलफ खाँ को उपदेश देना
- रायचन्द्र की पत्नी की रक्षा
- लाहौर-भ्रमण
- कुरसाने निवास (कौसाना) पाली जिले में।
- रबाबची पर दया
- रज्जब जी से मिलने जाना

सदैव ईश्वर में ही लीन रहने वाने संत सुन्दरदास जी अपने उपदेशों में सर्वत्र हरि की महिमा का गान करते थे। अपने अन्तिम समय का कथन भी उन्होंने अपनी वाणी से इस प्रकार कर दिया था-

वैद्य हमारे रामजी, औषधि हु हरि नाम।
'सुन्दर' यह उपाय अब सुमिरण आठों जाम।।

'सुन्दर' संशय करे नहीं, बड़ा महुच्छव येह।
आतम परमातम मिल्या, रहो कि विनशो देह।।

सात वर्ष सौ में घटे, इतने दिन का देह।

'सुन्दर' आतम अमर है, देह खेह का खेह।।

संवत् सत्रहसो छीयाला, कातिक सुदि अष्टमी उजाला।

तीजे पहर बृहस्पतिवार, सुन्दर मिलिया सुन्दर सार ।।

इस प्रकार वि.सं. 1746 कार्तिक शुक्ला अष्टमी बृहस्पतिवार के दिन तिसरे पहल में नश्वर शरीर को त्याग कर सुन्दरदासजी ब्रह्मलीन हो गये। अन्त में एक सवैया प्रस्तुत कर रहा हूँ। जो इन्दव छन्द में है।

मौज करी गुरुदेव दया करि

शब्द सुनाइ कह्या हरि नेरो।

ज्यों रवि के प्रगटे निशि जात,

सुदूरि कियो भ्रम भांनि अंधेरो।

कायिक वाचिक मानसहूँ,

कटिहैं गुरुदेवहि बन्धन मेरो।

'सुन्दरदास' कहै कर जोरि जु,

दादूदयाल को हूँ नित चेरो।।

दादू सद्गुरु के चरण, अधिक अरुण अरविन्द।

दुःखहरण तारण-तरण, मुक्तकरण सुखकन्द।।

नमस्कार 'सुन्दर' करत निश दिन बारंबार।

सदा रहो मम शीश पर, सद्गुरु चरण तुम्हार।।

।।सत्यराम।।